दिनांक–08.02.2025

UG Thrid Semester MIC,MDC (Philosophy)

# वेदांत दर्शन में ब्रह्म और आत्मा का संबंध

वेदांत दर्शन, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत के अनुसार, ब्रह्म और आत्मा के बीच का संबंध एकता का है। अद्वैत वेदांत का मानना है कि ब्रह्म (सर्वोच्च वास्तविकता) और आत्मा (व्यक्तिगत आत्मा) वास्तव में एक ही हैं। इस दृष्टिकोण को 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) के रूप में व्यक्त किया गया है।

**ब्रह्म** : ब्रह्म को निराकार, अनंत और अपरिवर्त्तनीय माना गया है। यह सत्य, ज्ञान और अनंतता का प्रतीक है। ब्रह्म से ही सृष्टि का उद्‌गम होता है और उसमें ही उसका विलय होता है।

**आत्मा** : आत्मा को शुद्ध चेतना और ब्रह्म का अंश माना गया है। आत्मा प्रत्येक जीव में विद्यमान है और इसका स्वभाव शुद्ध, अविनाशी और अनंत है। आत्मा को अविद्या (अज्ञान) के कारण अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान नहीं होता और यह माया (भ्रम) के कारण संसार में बंधन में रहती है।

**संबंध** : वेदांत दर्शन के अनुसार, आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं। आत्मा का वास्तविक स्वरूप ब्रह्म ही है, लेकिन अज्ञान के कारण आत्मा अपने-आप को अलग मानती है। जब आत्मा ज्ञान प्राप्त करती है और अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानती है, तब वह ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव करती है।

इस प्रकार, वेदांत दर्शन में ब्रह्म और आत्मा का संबंध एकता का है, जहाँ आत्मा का वास्तविक स्वरूप ब्रह्म है और ज्ञान प्राप्ति के माध्यम से यह एकता का अनुभव किया जा सकता है।

**डॉ. श्रवण कुमार मोदी**
**सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग**
**शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय**
**बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण**
**मो0–9608685335**
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com